विस्तार पत्रक भा.कृ.अनु.प./रा.उ.अ.के/2019/01

ऊँटनी का दूध स्वास्थ्यवर्धक

-जानिये कैसे?

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर, 334001 (राजस्थान)

ऊँटनी का दूध स्वास्थ्यवर्धक -जानिये कैसे ?

शुष्क व अर्धशुष्क क्षेत्रों के पशुपालकों में उष्ट्र पालन एक अभिन्न हिस्सा है। पारंपरिक तौर पर इस पशु का राजस्थान व देश के अन्य राज्यों में कृषि एवं यातायात के साधन के रूप में उपयोग होता रहा है परन्तु वर्तमान परिस्थिति में इसका उपयोग कम होने के कारण लगातार ऊँटों की जनसंख्या में गिरावट देखी जा रही है। अब इस पशु का उपयोग दूध उत्पादन में भी किया जाने लगा है। इससे इस पशु की घटती संख्या पर लगाम लग सकती है।

ऊँटनी के दूध का उपयोग सदियों से कुछ समाज विशेष द्वारा पीने के काम में लाया जा रहा था परंतु आजकल इस दूध की मांग देश एवं विदेश में सभी वर्ग के लोगों में है। इसका कारण मुख्यतः इस दूध की जैविक क्षमता है जिससे यह विभिन्न मानव रोगों में लाभकारी पाया गया है। देश व विदेश में हुए अनुसंधानों से यह पता चला है कि यह दूध मानव की कुछ प्रमुख बीमारियों जैसे गेस्ट्रो–इनटेस्टिनल डिसऑर्डर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, भोजन एलर्जी, हेपेटाइटिस, कैंसर इत्यादि में लाभकारी सिद्ध हुआ है। इतना ही नहीं इस दूध के सेवन से खून में कोलेस्ट्रॉल का कम होना एवं इम्यून सिस्टम का मजबूत होना भी उल्लेखित है। किण्वित दूध का उपयोग मुख्यतः पेट एवं आंत की बीमारियों में किया जाता है। इसमें उपस्थित विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म–जीवविरोधी कारक जैसे–लाइसोजाइम, हाइड्रोजीन परऑक्साइड, लैक्टोफेरिन, लैक्टोपर ऑक्सीडेज एवं इम्यूनोग्लोब्युलिन इस दूध की रोगविरोधी क्षमता को बढ़ाती है। ऊँटनी के दूध में प्रोबायोटिक बैक्टीरिया की भी खोज की जा चुकी है जो स्वास्थ्यवर्धक होता है।

आंत एवं पाचन तंत्र के विकारों में ऊँटनी का दूध उपयोगी पाया गया है। ऊँटनी के दूध में अत्यधिक मात्रा में सूजन–रोधी प्रोटीन्स भी पाए गए हैं। असंतृप्त वसीय अम्ल एवं विटामिन की अधिक मात्रा शर्करा संबंधित उपापचय में सुधार करती है। किण्वित दूध उत्पाद में महत्वपूर्ण एंजाइम पाए जाते हैं जो दूध प्रोटीन के पाचन में मदद करता है। हाल में ही हुए एक अनुसंधान में यह पाया गया है कि ऊँटनी के दूध में अतिसार–रोधी (एंटीडायरियल) गुण है एवं यह बच्चों में हुए सामान्य अतिसार एवं रोटावायरस से हुए अतिसार (डायरिया) को भी ठीक कर देता है।

अनुसंधान में यह भी पाया गया है कि जिन व्यक्तियों में दूध सेवन से लेक्टोज अपच की समस्या है, उनके लिए ऊँटनी का दूध एक महत्वपूर्ण विकल्प है। इस तरह के मरीज ऊँटनी के दूध का सेवन कर इसे आसानी से पचा सकते हैं। एल–लेक्टैट अधिक मात्रा में ऊँटनी के दूध में पाया

जाता है जिससे इसमें उपस्थित लेक्टोज का पाचन सही से हो जाता है। वही गाय के दूध में डी–लेक्टैट ज्यादा मात्रा में पाई जाती है।

ऊँटनी का दूध मधुमेह में लाभकारी

काफी समय पहले से ऊँटनी के दूध का उपयोग मधुमेह के रोगियों में होता रहा है। मधुमेह एक मेटाबोलिक डिसऑर्डर है जिसमें खून में शुगर की मात्रा सामान्य से बढ़ जाती है। ऊँटनी के दूध में इन्सुलिन एवं इंसुलिन प्रकार के वृद्धि कारक–1 (इंसुलिन लाइक ग्रोथ फैक्टर–1) की मात्रा अन्य दूध से ज्यादा पाई गई है एवं यह पाचन तंत्र में नष्ट नहीं होता है। इस दूध के सेवन से मधुमेह की वजह से होने वाले अन्य विकारों में भी कमी आती है।

बच्चों में भोजन एलर्जी में लाभकारी

कुछ भोज्य पदार्थ जिसमें दूध एवं दूध उत्पाद भी शामिल हैं, बच्चों में एलर्जी के कारक होते हैं। ऊँटनी के दूध से बच्चों में पाये जाने वाले इम्यूनोग्लोब्युलिन–ई प्रतिक्रिया नहीं करते हैं जिससे एलर्जी नहीं होती है। एक अनुसंधान, जिसमें बच्चों को एलर्जिक खाना खिलाकर फिर ऊँटनी का दूध पिलाया गया एवं पाया गया कि ऊँटनी का दूध पीने वाले बच्चों में एलर्जी के लक्षण चार दिन बाद पूरे समाप्त हो गए। यह माना गया है कि इस दूध में उपस्थित इम्यूनोग्लोब्युलिन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भोजन एलर्जी वाले बच्चों में ऊँटनी का दूध उपयोगी साबित हो सकता है।

खून में कोलेस्ट्रॉल कम करने की क्षमता

खून में अधिक कोलेस्ट्रॉल की मात्रा दिल की बीमारी का प्रमुख कारण माना जाता है। यह देखा गया है कि चूहों को किण्वित उष्ट्र दूध पिलाने से इनके खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटती है। इस प्रभाव के कारणों का अभी पता नहीं चला है लेकिन यह माना जाता है कि इस दूध में उपस्थित बायोएक्टिव पेप्टाईड कोलेस्ट्रॉल से प्रतिक्रिया कर इसकी मात्रा को कम करते हैं। इस कड़ी में यह भी माना जाता है कि ऊँटनी के दूध में आरोटि अम्ल की उपस्थिति भी चूहों और मानव रक्त में कोलेस्ट्राल के स्तर को कम करने में सहायक है।

सोरायसिस (अपरस) के इलाज में उष्ट्र दूध की उपयोगिता

सोरायसिस अर्थात् अपरस एक भयानक चर्म रोग है। एक अनुसंधान में यह पाया गया है कि एक त्वचा क्रीम जिसमें 40 प्रतिशत उष्ट्र दूध मिलाया गया था, जब सोरायसिस के मरीजों की त्वचा पर लगाया गया तो बहुत ही अच्छा परिणाम प्राप्त हुआ। इस क्रीम के उपयोग से त्वचा पर सुखद ठंडक महसूस होती है एवं खुजली व अन्य पीड़ा भी कम हो जाती है। त्वचा का लालीपन एवं सूखापन भी काफी हद तक कम हो जाता है। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र में ऊँटनी के दूध से त्वचा क्रीम बनाई गई थी एवं परीक्षण में यह पाया गया कि यह क्रीम सूखी त्वचा के लिए अत्यंत लाभकारी है।

हेपेटाइटिस-सी एवं बी में ऊँटनी का दूध लाभकारी

हैपेटाइटिस–सी वायरस (एचसीवी) दुनिया भर में फैल गया है और अब तक कोई प्रभावी उपचार उपलब्ध नहीं है। बहुत लोग इस बीमारी के उपचार हेतु पारंपरिक औषधि का उपयोग करते हैं। एक अनुसंधान में यह पाया गया है कि ऊँटनी के दूध में ज्यादा मात्रा में लैक्टोफेरिन की उपस्थिति के कारण यह मानव ल्युकोसाइट में एचसीवी के प्रवेश को रोकता है। इतना ही नहीं ऊँटनी के दूध में उपस्थित इम्यूनोग्लोब्युलिन–जी, एचसीवी को पहचान लेता है जो गुण गाय के दूध में नहीं पाया जाता है। इसके अलावा ऊँटनी के दूध का प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में प्रभाव के कारण यह पुरानी हैपेटाइटिस–बी के मरीजों में सेलुलर प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को बढ़ाता है जिससे विषाणु के डीएनए के पुनरावृत्ति को रोकता है एवं ऐसे मरीजों को स्वास्थ्य लाभ में मदद करता है।

शरीर के प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में ऊँटनी का दूध लाभकारी

कई अध्ययनों में प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए ऊँटनी के दूध का उपयोग किया गया। यह ज्ञात है कि ऊँटनी के दूध में इम्युनोग्लोब्युलिन का एक पूरा वर्ग है, जो कि मूल रूप से अन्य सभी एंटीबॉडी से अलग है। अतः ऊँटनी के दूध की अद्वितीय संरचना के कारण यह गाय और मानव दूध से पूरी तरह से अलग है। अध्ययन में पाया गया कि ऊँटनी और गाय के दूध प्रोटीन के बीच प्रतिरक्षा विहीन में असमानता ही शारीरिक पौष्टिक और नैदानिक पहलुओं का एक महत्वपूर्ण मानदंड माना जा सकता है। एक अन्य अध्ययन से संकेत मिलता है कि ऊँटनी के दूध में ऊँटों का विशेष इम्युनोग्लोब्युलिन होता है। इस इम्युनोग्लोब्युलिन की संरचना मानव इम्युनोग्लोब्युलिन के समान है लेकिन आकार में केवल दसवां भाग ही है अर्थात् इसका आकार काफी छोटा है जिससे शरीर प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा आसानी से यह रोग के कारक को लक्ष्य बनाना एवं उनमें प्रवेश कर उन्हें नष्ट करना संभव है जो मानव इम्युनोग्लोब्युलिन नहीं कर सकते।

- ऊँटनी के दूध में पेप्टाइडोग्लाइकेन सदृश प्रोटीन (पीजीआरपी) बहुत अधिक है। यह मेजबान की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है और रोगाणुरोधी गतिविधि है।
- ऊँटनी के दूध में उपस्थित लैक्टोफेरिन में गायों और बकरियों के दूध के मुकाबले ज्यादा जैविक क्षमता है। लैक्टोफेरिन जीवाणुओं की बढ़ोतरी और बाह्य रोगजनकों को रोकता है।
- लैक्टोपेराक्सीडेज का ग्राम–निगेटिव जीवाणुओं जैसे एसेरिचीया कोलाई, साल्मोनला और स्यूडोमोनस के प्रति एक जीवाणुनाशक गतिविधि है।
- एन–एसिटील–बीटा–डी–ग्लूकोसामिडेज में जीवाणुरोधी गतिविधि है जो ऊँटनी के दूध एवं मानव दूध में समान मात्रा में पाया जाता है।

कैंसर में ऊँटनी का दूध उपयोगी

विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि ऊँटनी के दूध एवं मूत्र के उपयोग से कैंसर कोशिकाओं के विकास में कमी होती है। चूहों में इसका सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है। परिणाम बताते हैं कि रक्त कैंसर (ल्यूकेमिया) के उपचार में सफलता की दर ज्यादा है। फेफड़े, यकृत और स्तन कैंसर के उपचार के लिए भी प्रयोग जारी है। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि ऊँटनी के दूध ने हेप–जी 2 (मानव हेपेटामा) और एमसीएफ 7 (मानव स्तन) कोशिकाओं के प्रसार को काफी हद तक अवरूद्ध किया जबकि यह गुण गाय के दूध में नहीं देखा गया। इसके अलावा, बृहदान्त्र कैंसर सेललाइन, एचसीटी–116 में इनविट्रो विधि द्वारा डीएनए नुकसान और एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि की क्षमता के लिए ऊँटनी के दूध में उपस्थित लैक्टोफेरिन की क्षमता का मूल्यांकन भी किया जा चुका है।

ऑटिज्म में उष्ट्र दूध उपयोगी

ऑटिज्म स्पैक्ट्रम विकार, वृहद तंत्रिकीय–विकास विकारों का एक भाग है जिसको व्यापक विकासीय विकार के नाम से भी जाना जाता है। जिसके अंतर्गत ऑटिज्म, अस्पर्गर सिंड्रोम, रेट्स विकार एवं चाइल्ड डिसइंटग्रेटीव विकार आदि को सम्मिलित किया जाता है। विशेषज्ञ डॉ. यागिल ने ऑटिज्म के उपचार हेतु ऊँटनी के दूध के प्रयोग का सुझाव दिया साथ ही एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. अमनोन गोनिने ने जलन/सूज़न को ऑटिज्म का ही एक घटक माना। इन्होंने बताया कि इस सूज़न को कम करने में ऊँटनी का दूध बहुत ही लाभदायक है। ऊँटनी के दूध फार्म से जुड़े ईडेन ने भी डॉ. गोनिने के मत से सहमति दर्शाई है। उन्होंने बताया कि ऑटिज्म की शुरूआती अवस्था के साथ–साथ असावधान–अतिक्रियाशील विकार से ग्रसित बच्चों को ऊँटनी का दूध पिलाने से उनमें बेहतर परिणाम प्राप्त हुए यद्यपि कुछ अभिभावकों के अनुसार ऑटिज्म की गम्भीर अवस्था में भी इस दूध से काफी सुधार होता है।

तपेदिक रोगियों के लिए ऊँटनी का दूध

केन्द्र में हुए अनुसंधान में यह पाया गया है कि ऊँटनी के दूध के सेवन से मल्टीड्रग–प्रतिरोधी तपेदिक बीमार रोगियों के लक्षण में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। इस प्रकार के मरीजों को प्रतिदिन एक लीटर ऊँटनी का दूध पिलाया गया तत्पश्चात् यह पाया गया कि खांसी, थूक एवं छाती में दर्द समाप्त हो गया एवं मरीजों में ज्यादा भूख लगना व शरीर का वजन बढ़ना इत्यादि देखा गया। ऊँटनी के दूध में यह गुण इसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवनिवारक घटकों की उपस्थिति के कारण माना गया है।

अतः निष्कर्ष तौर पर यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ऊँटनी का दूध मानव स्वास्थ्य हेतु किसी वरदान से कम नहीं है।

ऊँटनी के दूध से बने लोकप्रिय उत्पाद

लेखक गण

देवेन्द्र कुमार, एस. डी. नारनवरे

मु. मतीन अंसारी, राकेश रंजन एवं

आर. के. सावल

प्रकाशक : संस्थान तकनीकी प्रबंधन इकाई

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़, बीकानेर, राजस्थान, भारत

दूरभाष : +91-151-2230183 (O), फैक्स : +91-151-2970153

ई-मेल : nrccamel@nic.in, वेबसाईट : www.nrccamel@icar.gov.in